नीला नहीं होता कंठ नीलकंठ का

डॉ. किशोर पंवार

अपने परिवेश के इन सुन्दर, चंचल, कूदते-फुदकते, चहचहाते नन्हें-नन्हें पक्षियों की ओर अक्सर हमारा ध्यान नहीं जाता। शहर के धूल-धुएं और कोलाहल से हटकर हम ज़रा इनकी दुनिया में झांककर तो देखें। ये अपने आप में असीम संसार समेटे हैं.....।

कुछ दिनों पूर्व मेरी एक मित्र नीलकंठ देखे जाने का ज़िक्र कर रही थी; उसके सुन्दर नीले रंग का, लम्बी, मोटी, कत्थई चोंच का। उसका विवरण के विस्तार में जाना मेरे शक को विश्वास में तब्दील कर रहा था कि उसने जिसे देखा वो नीलकंठ नहीं किलकिला था। जिसे आम तौर पर मच्छीमार भी कहा जाता है।

नीलकंठ बनाम किलकिला

किलकिला एक सुन्दर नीले-फिरोज़ी रंग की चिड़िया है जो अक्सर हमारे घरों के आसपास तारों पर या टी.वी. के एंटीना पर बैठी दिखाई दे जाती है। इसे नीलकंठ समझने की भूल आम तौर पर हो जाती है। वस्तुतः यह पक्षी इतना सुन्दर है कि इसकी ओर ध्यान आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है। और फिर जो सुना है नीलकंठ के बारे में, उसका जोड़ भी तो इसी से बैठता है।

मैना के आकार की इस मच्छीमार चिड़िया का सिर व गर्दन चॉकलेटी-भूरी तथा आगे का भाग सफेद होता है। चोंच भारी, नुकीली कत्थई रंग की तथा दुम लम्बी और लाल होती है। पंखों में एक सफेद धब्बा होता है जो उड़ते समय साफ दिखाई देता है। पानी पर इनकी निर्भरता कम है लेकिन शिकार के लिए ये अक्सर नदी-नालों व तालाबों के ऊपर एक ही स्थान पर उड़ती रहती हैं, फिर तुरन्त नीचे गोता लगाकर मछली पकड़ती हैं।

किलकिला में नर मादा एक से होते हैं। घोंसला ज़मीन पर, नदी, नालों के कटे किनारों पर सुरंग के रूप में होता है। दूर से यह गोल छेद जैसा दिखाई देता है। अक्सर उड़ते समय किलकिल किल ..... की आवाज़ करने के कारण इसे किलकिला नाम दिया गया है। अंग्रेज़ी में इसे किंगफिशर कहते हैं।

अब बात करते हैं असली नीलकंठ की जिसे अंग्रेज़ी में ब्लू जे कहा जाता है। कबूतर के आकार का यह एक हल्का नीला भूरा पक्षी है। इसका सिर कुछ बड़ा, चोंच छोटी, काली व भारी, वक्ष भूरा-बादामी, उदर तथा दुम का निचला भाग पीला-नीला होता है। आम धारणा के विपरीत नीलकंठ का कंठ नीला नहीं बल्कि हल्का पीला होता है। उड़ते समय पंखों के गहरे पीले-नीले चमकदार भाग पट्टियों के रूप में दिखाई देते हैं जिससे उड़ते समय यह बहुत सुन्दर दिखाई देता है। इस अवस्था में ऐसा लगता है मानो नीले रंग की चमकदार गेंद हवा में लुढ़क रही हो। इसी गुण के कारण इसे इंडियन रोलर नाम भी दिया गया है।

इसे अक्सर खेतों वाले खुले प्रदेशों में बिजली या टेलीफोन के तारों पर अकेले बैठे देखा जा सकता है। नर मादा में, रंग भेद नहीं पाया जाता। बैठी अवस्था में नीलकण्ठ कतई आकर्षक नहीं होता। केवल उड़ते समय ही यह सुन्दर दिखता है।

तरह-तरह के कीट, इल्लियां, मेंढक व छिपकली नीलकण्ठ का प्रिय भोजन है। कीटों को पकड़ने के लिए ये तेज़ी से ज़मीन पर झपटते हैं फिर उसी स्थान पर आ जाते हैं। कीटों का जैव नियंत्रण कर ये खेती के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं।

कोयल

पेड़ों के प्राकृतिक कोटर में ये घोंसला बनाते हैं।

महोक कोयल नहीं है

नीलकंठ के बाद अब एक अन्य सामान्य पक्षी की चर्चा करते हैं जिसे अक्सर कोयल समझ लिया जाता है। यह है कूकल, महूका या महोक। महोक (क्रो - फिजेंट) जंगली कौए के आकार की एक बड़ी चमकीली, काली-भूरी चिड़ियां है। इसके पंख लाला-भूरे और दुम काली तथा चौड़ी होती है। ये अकेले या जोड़ों में ज़मीन पर घास-फूस के बीच चुपके-चुपके चलते देखे जा सकते हैं। झाड़-झंखाड़ तथा बस्तियों के पास इनका बसेरा होता है। कभी-कभी ये छोटे पेड़ों पर चढ़कर भोजन की तलाश भी करती हैं। एक डाल से दूसरी डाल पर फुदकते समय महोक कुहूक-कुहूक जैसी बोली बोलती है। इनमें लिंग भेद नहीं होता। नर-मादा दोनों घरेलू कर्त्तव्य निभाते हैं। ये परजीवी नहीं हैं अर्थात अपना घोंसला बनाती हैं और अण्डों-बच्चों की देखभाल भी स्वयं करती हैं। (कोयल ऐसा नहीं करती) गहरे काले-भूरे रंग का संयोजन और लम्बी पूंछ इसे सुन्दर बनाते हैं।

कोयल की तुलना में महोक ज़्यादा दिखाई देती है। कोयल वृक्षवासी होने के कारण आसानी से नहीं दिखाई देती। कोयल महोक से छोटी, दुबली-पतली व लम्बी दुम वाली चिड़िया है। हरी-पीली चोंच और गहरी लाल आंखें इसकी खास पहचान हैं। कोयल में नर चमकदार काला होता है जबकि मादा भूरी होती है। मादा के पूरे शरीर पर घनी सफेद-भूरी चित्तियां होती हैं। दोनों के रंग-रूप में इतना ज़्यादा अंतर है कि दोनों अलग जाति के से पक्षी लगते हैं। मादा एक पेड़ से दूसरे पर जाते वक्त किक-किक की आवाज़ निकालती है। जिसे हम कोयल की आवाज़ (कुहू...कुहू...) कहते हैं वह वास्तव में नर कोयल की बोली है।

कोयल जाड़ों में अक्सर खामोश रहती है परन्तु गर्मी में नर धीरे-धीरे कूं-कूं बोलना शुरू करता है। हर बार यह आवाज़ तेज़ होती जाती है।

महोक

सातवीं-आठवीं बार यह अपने चरम पर होती है। कोयल मुख्य रूप से फलभक्षी है। यह वृक्षों पर ही रहती है, महोक की तरह ज़मीन पर नहीं आती। इसका नीड़ परजीवी है, अर्थात कोयल न तो अपना घोंसला बनाती है और न ही अपने अण्डों, बच्चों की देखभाल करती है। यह अक्सर अपने अण्डे कौओं के घोंसलों में देती है जिनका लालन-पालन भी कौओं द्वारा ही किया जाता है।

कम पानी वाले मटके में पत्थर डालने वाली कौए की चतुराई को छोड़ दें और कौए और कोयल के सयानेपन की तुलना करें तो कौआ चतुराई में कोयल के पासंग भी नहीं ठहरता। *(स्रोत फीचर्स)*

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता शुल्क 150 रुपए

सदस्यता शुल्क कृपया एकलव्य, भोपाल के नाम बने ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से एकलव्य, ई-7 एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 के पते पर भेजें।